श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

कलस हिन्दुस्तानी–तौरेत

नोट : यह कलस हिन्दुस्तानी अनूपशहर में सनन्ध के बाद उतरी।

राग श्री मारू

सुनियो बानी सोहागनी, हुती जो अकथ अगम।
सो बीतक कहूं तुमको, उड़जासी सब भरम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं—हे परमधाम की ब्रह्मसृष्टियो! (सुहागिनियो) सुनो, मैं तुम्हें वह ज्ञान, जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं कहा, उस परब्रह्म जिसको कोई समझ ही नहीं पाया, उसकी हकीकत का ज्ञान बताती हूं। वह हकीकत में हमारी ही बीतक है, जिसे सुनने से सब संशय मिट जाएंगे।

रास कह्या कछु सुनके, अब तो मूल अंकूर।
कलस होत सबन को, नूर पर नूर सिर नूर।। २ ।।

रास की वाणी का वर्णन सतगुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज के मुखारबिन्द से सुना था। अब तो मूल धाम-धनी अन्दर बैठे हैं। धाम का अंकुर, निसबत जागृत हुई। अब उनके ज्ञान से संसार के सार रूप यह कलश वाणी तुम्हें बताती हूं, जिससे हद से परे बेहद (योगमाया), उससे परे अक्षर और उससे भी परे अक्षरातीत का ज्ञान होगा।

कथियल तो कही सुनी, पर अकथ न एते दिन।
सो तो अब जाहेर भई, जो अग्या थें उतपन।। ३ ।।

आज दिन तक जो संसार के महापुरुषों ने ग्रन्थ! रचना की थी, उसे तो सबने सुना, पर आज दिन तक इस ज्ञान को किसी ने कहा ही नहीं, क्योंकि वह जानते ही नहीं थे। उस ज्ञान को जिसे अब स्वयं परब्रह्म मेरे अन्दर बैठकर कहलवा रहे हैं और उनकी आज्ञा से मैं कह रही हूं, बताती हूं।

मुझे मेहेर मेहेबूबें करी, अंदर परदा खोल।
सो सुख सनमंधियनसों, कहूं सो दो एक बोल।। ४ ।।

जो वाणी मेरे मेहबूब ने मेरे ऊपर कृपा करके मेरे अन्दर बैठकर कही है, निराकार के आगे जो परदे में थीं, सब खोलकर बातें समझाई हैं, वह अखण्ड सुख की बातें अपने मूल सम्बन्धी सुन्दरसाथ को दो चार शब्दों में कहती हूं।

नोट : अब श्यामाजी (सतगुरु श्री देवचन्द्रजी) कहते हैं।

Nijanand App

मासूकें मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ।
कहे तूं दे पड़उतर, जो मैं पूछत हों तुझ।।५ ।।

मेरे माशूक अक्षरातीत श्री राजजी महाराज ने मुझे श्यामजी के मन्दिर में दर्शन देकर अपने दिल के छिपे भेद (गुह्य) बातें बताईं और मुझे कहा कि मेरे प्रश्नों का उत्तर दो।

तूं कौन आई इत क्योंकर, कहां है तेरा वतन।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।।६ ।।

धनी ने पूछा कि तुम कौन हो? यहां इस ब्रह्माण्ड में क्यों आई हो? तथा तुम्हारा घर कहां है? तुम किस धनी की अंगना हो? इन बातों का उत्तर दृढ़ मन से दो।

तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार।
विध सारी याकी कहो, इन जिमी के प्रकार।।७ ।।

यह भी पूछा कि तुम होश में हो या नींद में? इसका विचार करके बताओ कि तुम क्या कह रही हो? यह भी बताओ कि यह जमीन कौन सी है? इसकी सुध बताओ जहां तुम बैठे हो।

तब मैं पियासों यों कह्या, जो तुम पूछी बात।
मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत।।८ ।।

तब मैंने धनी को उत्तर दिया कि हे पिया! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार जो जानती हूं वह कहती हूं।

सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल।
ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल।।९ ।।

हे पिया! आपने इस संसार की बात पूछी है, अब मैं उसे आपसे कहती हूं। यह सारा संसार कपट, माया, मोह की बुद्धि से भरा पड़ा है।

मैं न पेहेचानों आपको, न सुध अपनों घर।
पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर।।१० ।।

इस संसार में मैं यह नहीं जानती हूं कि मैं कौन हूं? मुझे अपने घर की भी सुध नहीं है कि मैं कहां से आई हूं और कहां जाना है। आपको भी मैंने अपना खसम (पिया) बेसुधी में कहा है। मेरी इसी हालत को ही जागना समझें।

ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीख।
कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत।।११ ।।

यह ब्रह्माण्ड जो दिख रहा है वह अन्तरिक्ष में लटक रहा है। बहुतों ने इसको खोजा, परन्तु इस बात के लिए ही थककर हार गए कि यह ब्रह्माण्ड बीच में ही कैसे लटक रहा है?

जल जिमी तेज वाए को, अवकास कियो है इंड।
चौदे तबक चारों तरफों, परपंच खड़ा प्रचंड।।१२ ।।

यह ब्रह्माण्ड पांच तत्वों (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश) से बना है। चौदह लोकों के चारों तरफ माया मोह का ही विस्तार है जो प्रचण्ड भ्रम का रूप है।

यामें खेल कई होवहीं, सो केते कहूं विचित्र।
तिमिर तेज रुत रंग फिरे, ससि सूर फिरे नखत्र।।१३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में तरह-तरह के विचित्र खेल होते हैं। इसमें रात, दिन, ऋतुएं, चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्र सब घूमते रहते हैं।

Nijanand App

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास।
साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास।। १४ ।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में पचास करोड़ योजन जमीन है। उसमें से साढ़े तीन करोड़ योजन जमीन मृत्यु लोक की है। इसमें सूर्य और चन्द्रमा से अंधेरा और उजाला होता है।

उजास सूर को कहावहीं, सो तो अंधेरी के तिमर।
तिनथें कछू न सूझहीं, जिमी आप न घर।। १५ ।।

यहां सूर्य की रोशनी को लोग उजाला समझते हैं। वह तो घोर अन्धकार का रूप है। उससे भी अपनी तथा घर की सुध नहीं होती।

जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर।
जीव पसु पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर।। १६ ।।

जब सूर्य उदय होता है तो माया मोह का चक्कर चालू हो जाता है। जीव, पशु, पक्षी, आदमी इसको देखते ही माया के चक्कर में पड़ जाते हैं।

काल न देखें इन फेरे, याही तिमर के फंद।
ए सूरज आंखों देखिए, पर याही फंद के बंध।। १७ ।।

इस माया के चक्कर में ही उन लोगों को अपनी मौत भी दिखाई नहीं पड़ती (कि हमें कभी मरना भी है)। सूर्य उदय के साथ ही माया के बन्धन बढ़ते जाते हैं।

वाओ बादल बीज गाजही, जिमी जल न समाए।
ए पांचो आप देखाए के, फेर न पैदा हो जाए।। १८ ।।

यह हवा, बादल की गर्जना, पानी का बरसना अथवा यह पांचों समय-समय पर अपना रूप दिखाकर ऐसे चले जाते हैं जैसे कि इनका संसार में कभी आना ही नहीं हुआ था।

या भ्रांत अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसों दिस।
ए मोहजल लेहेरां लेवहीं, सागर सब एक रस।। १९ ।।

इस तरह संसार की दसों दिशाओं में प्रकृति द्वारा अनेक प्रकार के बदलाव होते हैं और मोह ममता की लहरें चलती हैं और चारों तरफ एक-सा ही नजर आता है।

ए कोहेड़ा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल।
कहां कल किल्ली कुलफ, जो द्वार न पाइए सूल।। २० ।।

यहां काली रात और धुन्ध है, जिस कारण किसी को संसार की हकीकत का ही पता नहीं चलता। जब पार (बाहर) जाने के दरवाजे का ही पता नहीं चलता तो इसका ताला-चाबी और खोलने का ढंग कहां से पता चले?

ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तीनों ही घेर।
ए निरखे मैं नीके कर, पर पाईए न काहूं सेर।। २१ ।।

इन तीनों लोकों (पाताल, मृत्युलोक और बैकुण्ठ) तक को अंधेरे (अज्ञानता) ने घेर रखा है। मैंने यहां बहुत खोजा पर कहीं भी रास्ता नहीं मिला।

Nijanand App

ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध न सूझे सल।
ए सुध काहूं न परी, कई गए कर कर बल।। २२ ।।

यहां पर मोह, माया का इतना गहरा अन्धकार है कि कोई सुराख या जरा-सी ज्ञान की रोशनी का पता नहीं चलता। बहुत ज्ञानियों और अगुओं ने जोर तो बड़ा लगाया, पर किसी को खबर नहीं हुई।

ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप नहीं गम।
जोत दीपक इत क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम।। २३ ।।

ज्ञान मिला भी तो दीपक के समान मिला। चौदह लोकों के घोर अन्धकार में दीपक क्या उजाला करेगा? (चौदह वर्षों तक भागवत के ज्ञान से दीपक जैसा उजाला मिला, पर अन्धकार का भी पता नहीं चला कि कहां तक है।)

ए देखे ही परिए दुख में, कोई व्राध को रचियो रोग।
छुटकायो छूटे नहीं, नाहीं ना देखन जोग।। २४ ।।

यह ऐसी व्याधि (छूत का रोग) है कि इस माया को देखते ही यह चिपट जाती है और छुड़ाने से छूटती नहीं है, इसलिए यह ब्रह्माण्ड देखने योग्य नहीं है।

टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर।
गुन पख अंग इंद्रियां, कियो अंधेरी में अंधेर।। २५ ।।

यहां कर्मकाण्ड के बन्धनों की मुसीबत और मजबूरी से भरी टेढ़ी गलियां हैं, जिसमें आदमी भटकता रहता है और जन्म-मरण का चक्कर लगाता रहता है। यहां के गुण, पक्ष और इन्द्रियां भी माया में ही लिप्त रहती हैं, जिससे अज्ञानता का रूप और बढ़ जाता है।

तत्व पांचो जो देखिए, यामें ना कोई थिर।
प्रले होसी पल में, वैराट सचरा चर।। २६ ।।

पांचों तत्वों को यदि देखें, तो उनमें कोई भी अखण्ड नहीं है। यह सारा स्थावर (थिर) और जंगम (चर) ब्रह्माण्ड पल में ही नष्ट हो जाएगा।

ए उपजे पांचो मोह थें, और मोह को तो नाहीं पार।
नेत नेत कहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार।। २७ ।।

यह पांचों तत्व, निराकार मोह तत्व से पैदा हैं। मोह तत्व का तो पार ही नहीं है। इसे तो वेदों और शास्त्रों ने भी खोजा और अपने को इसे पार करने के लिए असमर्थ बताया तथा कहा कि निराकार के आगे की सुध हमें नहीं है।

मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार।
निकसन कोई न पावहीं, वार न काहूं पार।। २८ ।।

यह संसार बिना जड़, बिना किसी आधार का है और यह स्थिर नहीं है, अखण्ड नहीं है। इतना विकराल रूप है इसका, कि कहीं किनारा अथवा पार नहीं मिलता, इससे कोई पार नहीं जा सका।

पंथ पैंडे कई चलहीं, कई भेख दरसन।
ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे ना कोई निकसन।। २९ ।।

इस संसार में अनेक धर्म, पन्थ, पैंड़े चलते हैं। कई तरह के भेष बनाकर कई तरह से सोचते हैं। उनके बीच भी ज्ञान का अंधेरा ही है। कोई पार उतरा ही नहीं है।

Nijanand App

यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाएं।
कई उदम जो कीजिए, तो भी तिमर न छोड़े ताए।। ३० ।।

इसमें से निकलने के लिए जितने उपाय किए जाते हैं, उतने ही माया के बन्धन पड़ते जाते हैं। यहां से निकलने के लिए उपाय करें भी तो यह मोह माया का अन्धकार छूटता नहीं है।

इत जुध किए कई सूरमें, पेहेन टोप सिल्हे पाखर।
बचन बड़े रन बोल के, सो भी उलट पड़े आखिर।। ३१ ।।

इस माया से लड़ने के लिए बड़े-बड़े ज्ञानियों ने त्याग, तपस्या, ज्ञान के बड़े-बड़े अहंकार रूपी कवच धारण तो किए, बड़ी-बड़ी डींगें मारकर गए तो सही, पर माया में गिरकर समाप्त हो गए।

ए सुध अजूं किन ना परी, बढ़त जात विवाद।
ए खेल तो है एक खिन का, पर जाने सदा अनाद।। ३२ ।।

परब्रह्म की सुध यहां किसी को मिली नहीं, परन्तु आपसी धर्मों के विरोध बढ़ते जाते हैं। यह खेल एक क्षण का है। यहां लोग समझे बैठे हैं कि यह तो सदा से ही चला आ रहा है (अखण्ड है)।

खेल खावंद जो त्रैगुन, जाने याथें जासी फेर।
ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर।। ३३ ।।

इस खेल के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश को देखा, तो सोचा था कि यह माया से मुक्त होंगे। जब मैंने अच्छी तरह से खोजा, तो पाया कि यह भी माया में ही डूबे हैं।

ए द्वार कोई खोल के, कबहूं ना निकस्या कोए।
ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए।। ३४ ।।

इस ब्रह्माण्ड के दरवाजे (निराकार से आगे) को खोलकर कोई आगे नहीं जा सका। इस ब्रह्माण्ड के मालिक तीनों देव और ही बेसुधी में पड़े हैं।

ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध।
या विध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध।। ३५ ।।

यह मोह-तत्व का बन्धन जिसने बांधा है, वही खोल सकता है। जब यहां के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश का यह हाल है तो औरों की क्या कही जा सकती है?

निज बुध आवे अग्याएं, तोलों ना छूटे मोह।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए।। ३६ ।।

हे धनी! निज बुध अर्थात् जागृत बुद्धि (परा शक्ति) जो आपके हुक्म के अधीन है, इसके बिना यह मोह-तत्व का बन्धन छूट ही नहीं सकता। यहां आत्माएं अंधेरे में भटक रही हैं और जागृत बुद्धि के बिना छूट नहीं सकतीं।

ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रश्न।
कहूं और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन।। ३७ ।।

हे धनी! आपने जो पूछा उसके अनुसार मैंने संसार की हकीकत बताई है। अभी और भी बहुत कुछ है। वह भी कहती हूं, वह भी सुनो।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ३७ ।।

Nijanand App